© 2017 IJSRSET | Volume 3 | Issue 8 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099

द्वैताद्वैतदर्शन के सन्दर्भ में बुद्धि तत्व समीक्षा

पवन कुमार पाराशर
शोधच्छात्र, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान(मानित विश्वविद्यालय) भोपाल परिसर, मध्यप्रदेश,
डॉ.नीलाभ तिवारी
मार्गदर्शक, सहायकाचार्य, राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थान, श्री सदाशिव परिसर, पुरी, भारत।

शोधपत्रोद्देश्य- द्वैताद्वैत दर्शने के सन्दर्भ में बुद्धितत्व समीक्षा की आवश्यकता इसलिए करना आवश्यक समझा। क्योंकि बुद्धि तत्व के विषय में पाश्चात्य दार्शनिकों के सिद्धान्तों में अधिकाधिक रूप से देखने को मिलता है कि बुद्धि के लक्षण, प्रकार, सिद्धान्त, कारकादि की चर्चा की गयी है। भारतीयदार्शनिकों ने भी न्यायदर्शन, वैशेषिकदर्शन, योगदर्शन, मीमांसादि दर्शनों में बुद्धितत्व के सिद्धान्त, लक्षणादि की व्याख्या की है। अतः द्वैताद्वैतवेदान्त में बुद्धितत्व के बारे में क्या कहा गया है यह शोधपत्र के माध्यम से देखा जा रहा है। द्वैताद्वैत का तात्पर्य जो तत्व दो हो अथवा दो न हो, उसे द्वैताद्वैत या भेदाभेद के नाम से जाना जाता है। अर्थात् ब्रह्म जीव और जगत् से भिन्न भी है और अभिन्न भी है। जिस प्रकार घट मिट्टी से भिन्न भी होता है और घट मिट्टी से ही बना है इसलिए अभिन्न भी होता है। ब्रह्म अलौकिक गुणों के कारण जीव-जगत् से भिन्न है और संसार के प्रति निमित्तोपादान कारण होने से अभिन्न भी है।

दर्शन का तात्पर्य जिसके द्वारा वास्तविक तत्व का हमें दर्शन (ज्ञान) हो उसे दर्शन कहते हैं। भारतीय नव दर्शनों में छः आस्तिक दर्शन व तीन नास्तिक दर्शन कहे गये हैं।जो इस प्रकार हैं:-

1. पूर्वमीमांसादर्शन- जैमिनि जी द्वारा प्रणीत
2. उत्तरमीमांसादर्शन (वेदान्त दर्शन)
3. सांख्यदर्शन- कपिलमुनि का
4. योगदर्शन- पतंजलि का
5. न्यादर्शन- अक्षपादगौतम जी द्वारा प्रणीत

IJSRSET196564 | Received : 20 Nov 2017 | Accepted :25 Dec 2017 | November-December-2017 [(3)8 : 1316-1324]

6. वैशेषिकदर्शन- कणाद ऋषि प्रणीत

7. जैनदर्शन- ऋषभ/महावीर जी द्वारा प्रणीत

8. बौद्धदर्शन- भगवान बुद्ध द्वारा आरम्भित

9. चार्वाक- वृहस्पति/चार्वाक द्वारा चलायमान

षडास्तिक दर्शनों में उत्तरमीमांसा दर्शन को ही वेदान्तदर्शन के नाम से जानते हैं। वेदान्तदर्शन के भी निम्न भेद हैं:-

1. अद्वैतवेदान्तदर्शन- आदिशंकराचार्य जी का

2. द्वैतवेदान्तदर्शन- मध्वाचार्य जी का

3. द्वैताद्वैतवेदान्तदर्शन- निम्बार्काचार्य जी का

4. विशिष्टाद्वैतदर्शन- रामानुजाचार्य जी का

5. शुद्धाद्वैतवेदान्तदर्शन- वल्लभाचार्य जी का

6. अचिंत्यभेदाभेदवेदांत्तदर्शन- चैतन्य महाप्रभु का

उपरिलिखित वेदान्तदर्शनों में द्वैताद्वैतवेदान्तदर्शन चक्रसुदर्शनअवतारी भगवान निम्बार्काचार्य जी द्वारा प्रतिपादित है। निम्बार्काचार्य जी परमवैष्णव असाधारण विद्वान दार्शनिक थे। उन्होंने द्वैताद्वैत (भेदाभेद) सिद्धान्त का प्रतिपादन करते हुए स्पष्ट किया कि माया के गुण-दोष ईश्वर को प्रभावित नहीं कर सकते इसलिए वह जीवन एवं जगत् से भिन्न है। परन्तु जीव व जगत ईश्वर से ही निर्मित है इसलिए ईश्वर जीव व जगत से अभिन्न है। वेदान्तदर्शन हो अथवा अन्य दर्शन सभी में दार्शनिक चिंतन हेतु उत्तम बुद्धि की आवश्यकता होती है। मूर्ख व्यक्ति न ही दार्शनिकचिंतन कर सकता है और न ही दार्शनिक हो सकता है। अतः तत्वज्ञान हेतु उत्तमबुद्धि का होना परमावश्यक है।

द्वैताद्वैतदर्शन का परिचय- द्वैताद्वैत का तात्पर्य है कि जो तत्व न तो द्वैत हो न ही अद्वैत हो उसे द्वैताद्वैत अथवा भेदाभेद के नाम से जाना जाता है। 'दृश्यते अनेन इतिदर्शनम्' अर्थात् जिसके द्वारा वास्तविक तत्व का ज्ञान होता है वह दर्शन कहलाता है। द्वैताद्वैतदर्शन वेदान्तदर्शन का महत्वपूर्ण अंग है। द्वैताद्वैतदर्शन के प्रवर्तक भगवान श्रीकृष्ण के आयुध श्रीचक्रसुदर्शन के अवतार भगवान निम्बार्काचार्य जी हैं। ऐसे परमाचार्य जी की माता का नाम जयन्ती देवी व पिता का नाम श्री अरुणमुनि था। निम्बार्काचार्य जी का जन्म युधिष्ठिर संवत् 6 कार्तिक शुक्लपूर्णिमा को दक्षिण भारत के वैदूर्यपत्तन वर्तमान में जिसे पैठन कहने लगे हैं में हुआ

था। निम्बार्काचार्य जी का शैशव अवस्था का नाम नियमानंद था। माता-पिता के साथ अनेकानेक तीर्थों में घूमते हुए आप गोवर्धनगिरिराज जी की उपत्यका में तपस्या की। देवर्षि नारद जी द्वारा आपको श्री गोपाल अष्टादशाक्षरी मंत्रोपदेश व सनकादिसेवित भगवान शालिग्राम जी का श्री विग्रह प्राप्त हुआ। एकवार यति वेशधारी ब्रह्मा जी को इन्होंने निम्बवृक्ष के ऊपर सूर्यदर्शन कराकर भोजन कराया था। उसी समय ब्रह्मा जी ने इनका नाम निम्बार्काचार्य रख दिया।

निम्बार्काचार्य जी का द्वैताद्वैतदर्शन द्वैताद्वैतदर्शन को ही भेदाभेद सिद्धान्त के नाम से जाना जाता है। द्वैताद्वैत दर्शन में प्रमुख तत्व हैं-

1. अप्राकृत- अर्थात् ईश्वर की नित्य विभूति।
2. प्रकृति- अर्थात् सत्व-रज-तम की साम्यावस्था है।
3. काल- अर्थात् समय का वाचक।

सिद्धान्त-

1. द्वैदाद्वैतदर्शन में निर्गुण की अपेक्षा सगुणब्रह्म की सत्ता स्वीकारी है।
2. भगवान कृष्ण ही सृष्टि के उपादान-निमित्त-कारण है।
3. भगवान कृष्ण ही ब्रह्म हैं।
4. कृष्णभक्ति का तात्पर्य समर्पण है।
5. कृष्ण कृपा से ही मोक्ष प्राप्ति सम्भव है।
6. मुक्ति का अर्थ ब्रह्म प्राप्ति।
7. मुक्ति का साधन भक्ति ही है।
8. भक्ति का अर्थ शरणागति है।
9. भगवान के प्रसन्न होने से भक्त को निजधाम प्राप्त होता है।
10. निम्बार्काचार्यानुसार जीव अणु है।
11. जीव माया से बद्ध है।
12. जीव और जगत में परब्रह्म से भेद भी है और अभेद भी है।
13. जीव अल्पज्ञ है दुःखी है, जगत जड़ है, किन्तु ब्रह्म सर्वज्ञ है, सर्वशक्तिमान है, चेतन है।

14. ईश्वर सर्वव्यापक है।

15. ब्रह्म समस्त दोषों से रहित है।

16. जीवन जगत की सत्ता ईश्वराधीन है।

17. प्रलय में जीव, जगत, ब्रह्म में लीन हो जाते हैं।

18. ईश्वर की इच्छा मात्र से सृष्टि का निर्माण हो जाता है।

19. निम्बार्काचार्य जी के मत में जीवात्मा ज्ञानस्वरूप और ज्ञाता दोनों है।

20. जीव ब्रह्म से भिन्न-भिन्न है।

निम्बार्क सम्प्रदाय के अन्य नाम-

1. हंससंप्रदाय, 2. सनकादि संप्रदाय, 3. देवर्षि संप्रदाय

द्वैताद्वैत के अन्याचार्य-

1. औधुलोमि, 2. आश्मरथ्य, 3. भतृ प्रपंच, 4. भास्कर, 5. यादव

निम्बार्काचार्य के प्रमुख शिष्य-

1. श्रीनिवासाचार्य जी, 2. श्री औदुम्बराचार्य जी, 3. श्री गौरमुखाचार्य जी।

निम्बार्काचार्य जी द्वारा लिखित ग्रन्थ-

1. वेदान्तपारिजात सौरभ, 2. वेदान्त कामधेनु, 3. मन्त्ररहस्यषोडशी, 4. प्रपन्नकल्पवल्ली, 5. गीतावाक्यार्थ, 7. सदाचारप्रकाश, 8. श्रीराधाष्टकस्तोत्र, 9. प्रातःस्मरणस्तोत्र।

द्वैताद्वैत के अन्य दार्शनिक-

1. औधुलोभि, 2. आश्मरश्य, 3. भतृ प्रपंच, 4. भास्कर, 5. यादव, 6. श्री निवासाचार्य जी, 7. श्री विश्वाचार्य जी, 8. श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी, 9. श्री देवाचार्य जी (जाह्नवी), 10. श्री सुन्दरभट्टाचार्य जी (सेतुका), 11. श्री गाँगल भट्टाचार्य, 12. श्री केशवकाश्मीरी भट्टाचार्य, 13. श्री भट्टदेवाचार्य, 14. श्री हरिव्यासदेवाचार्य, 15.श्री परशुरामदेवाचार्य, 16. श्री हरिवंशदेवाचार्य, 17. श्री नारायण देवाचार्य, 18. श्री वृन्दावन देवाचार्य, 19. श्री गोविन्द देवाचार्य, 20. श्रीजी श्री गोविन्दशरण देवाचार्य, 21. श्रीजी श्री सर्वेश्वरशरण देवाचार्य, 22. श्रीजी श्री निम्बार्कशरण देवाचार्यजी 23. श्रीजी श्री ब्रजराजशरण देवाचार्य जी, 24. श्री गोपीश्वरशरण देवाचार्य, 25. श्रीजी श्री घनश्यामशरण देवाचार्य जी, 26. श्रीजी श्री बालकृष्णशरण देवाचार्य जी, 27. श्रीजी श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य जी, 28. श्रीविलासाचार्य, 29.

श्रीस्वरूपाचार्य, 30. श्रीमाधवाचार्य, 31. श्रीवलभद्राचार्य, 32. श्रीपद्माचार्य, 33. श्री श्यामाचार्य, 34. श्री गोपालाचार्य, 35.श्रीकृपाचार्य।

द्वैताद्वैत दर्शन में बुद्धि का लक्षण- द्वैताद्वैत दर्शन में मुख्य रूप से ब्रह्म-जीव-जगत के विषय में चर्चा की गयी है। ब्रह्म-जीव-जगत में परस्पर भेद व अभेद सम्बन्ध को निम्बार्काचार्य जी द्वारा द्वैताद्वैतदर्शन में बताया गया है। द्वैताद्वैतदर्शन में निम्बार्काचार्य जी द्वारा बुद्धि के सन्दर्भ में भी यत्र तत्र चर्चा की गयी है जो निम्नलिखित है-

यतो वाचो निवर्तन्ते। अप्राप्य मनसा सह।
आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान्। न विभेति कुतश्चनेति। (वेदान्तदर्शन अ-1-अनुवाक-1)

इस श्लोक के सन्दर्भ में ब्रह्म को सत्यस्वरूप, ज्ञानस्वरूप एवं अनन्त माना है। सत्य-ज्ञान अनन्तस्वरूप ब्रह्म को गुह्य स्थान अर्थात् बुद्धि में श्रेष्ठ आकाश यानी हृदयाकाश में जिसने जान लिया वह ब्रह्म के सदृश ही समस्त भोगों का भोक्ता होता है। इस प्रसंग में बुद्धि को गुह्य स्थान माना है। वेदान्तदर्शन प्रथमाध्याय के चतुर्थ अनुवाक में मनोमय के सदृश विज्ञानमय को पुरुष विशेष स्वीकार किया है।

ज्ञानेन्द्रियैः सहितं सन्मनोमयकोशो भवति।
बुद्धिर्ज्ञानेन्द्रियैः सहिता विज्ञानमयकोशो भवति।। (सूक्ष्मशरीरोत्पत्ति वेदात्तसार)

इन संस्कृत उक्तियों में मनोमय कोश व विज्ञानमयकोश को स्पष्ट किया है। पंचज्ञानेन्द्रियों के सहित मन मनोमयकोश कहलाता है। पंचज्ञानेन्द्रियों के सहित बुद्धि विज्ञानमयकोश कहलाती है। द्वैताद्वैतदर्शन के विज्ञानमय प्रसंग में श्रद्धा को परमपुरुष का शिर ऋत को उसका दक्षिणहस्त, सत्य को वामहस्त, योग को आत्मा एवं बुद्धि को आश्रयस्थान स्वीकार किया है। अर्थात् बुद्धि ही पुरुष की पुच्छ यानी आश्रय स्थान है।

न वायुक्तिये पृथगुपदेशात्।। (अ-2, पाद-4, सूत्रा-9)

न युक्तिये पृथगुपदेशात् सूत्र की व्याख्या प्रसंग में कहा गया है कि अहं बुद्धि वाला पुरुष वायुतन्मात्रा का अवलम्बन करके स्थूल शरीर में समान रूप से अवस्थित होते हैं। स्थूल शरीर का निर्माण पाँच तत्वों से मिलकर बना है। गोस्वामी तुलसीदास विरचित श्री रामचरित मानस में भी इसका लक्षण प्राप्त है।

क्षिति जल पावक गगन समीरा। पंच रचित अति अधम सरीरा।।
(रा.मा.दो-11-4)

अर्थात् पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश और वायु से रचित स्थूल शरीर होता है।
वायु के भी निम्न पंच भेद बताये गये हैं-

"प्राणोऽपानो व्यान उदानः समानः" (वृ.अ. 3)

अर्थात् प्राणवायु, अपान वायु, व्यान वायु, उदान वायु और समान वायु। द्वैताद्वैतदर्शन में वायवीय मरुदंशाश्रित अभिमानात्मकबुद्धि को 'मुख्यप्राण' शब्द का वाच्य कह कर निर्दिष्ट किया गया है। यहाँ पर बुद्धि मुख्य प्राण शब्द की बाह्य है।
बुद्धि की ही पर्याय स्मृति भी है यह दर्शनों के लक्षणों से सिद्ध है-
सर्वव्यवहार हेतुर्बुद्धिर्ज्ञानम्। सा च द्विविधा स्मृतिरनुभवश्च।(तर्कसंग्रह: वैशैषिकदर्शन)

व्यवहारमात्र जन्य बुद्धिः प्रकीर्तिता।
सा चापि द्विविधा ज्ञेया ह्यनुभूति स्मृतिस्तथा।। (आयुर्वेद)

बुद्धिर्ज्ञानम्। तद्विविधम्-स्मरणमनुभवश्च। (तर्कामृतम् न्यायदर्शनम्)
शंकराचार्य ने भी स्मृति को बुद्धि का आदि पर्याय स्वीकारा है। अतः यह सिद्ध होता है कि स्मृति बुद्धि की पर्याय है। द्वैताद्वैतदर्शन में स्मृति के बारे में क्या कहा गया है इस सूत्र में स्पष्ट है- (स्मृतेश्च अ-1-पाद-6 सूत्रा) द्वैताद्वैतदर्शन के इस सूत्र में स्मृति को जीवात्मा और परमात्मा की भेद कारिणी के रूप में प्रदर्शित किया है। द्वैताद्वैत के एक पक्ष भेद की दृष्टि से जीवात्मा और परमात्मा में भेद है यह स्पष्ट किया है।

अद्वैतवेदान्तदर्शन में बुद्धि- अद्वैतवेदान्तदर्शन में आदिशंकराचार्य जी ने बुद्धि के विषय में उपनिषदादि में यत्र तत्र चर्चा की है जो इस प्रकार है-

बुद्धेः पर्याय मनः प्रज्ञान संज्ञक मनसः पर्यायाः यदेतद्धृदयं मनश्चैतत्। संज्ञानमाज्ञानं विज्ञानं प्रज्ञानं मेधा दृष्टिधृतिर्मतिर्मनीषा जूतिः स्मृतिः संकल्पः वक्तुरसुः कामो वश इति सर्वाण्ये वैतानि प्रज्ञानस्य नामधेयानि भवन्ति। (ऐत. 3-2) द्वैताद्वैतवेदान्तदर्शन में बुद्धि के पर्याय स्मृति को जीवात्मा-परमात्मा के बीच भेद

कारिणी स्वीकार किया है और अद्वैतवेदान्त में स्मृति को बुद्धि की पर्याय माना है। स्मृति बुद्धि की ही पर्याय है। इस आधार पर द्वैताद्वैत व अद्वैतवेदान्तदार्शनिक एकमत हैं तथा अन्य उदाहरण के माध्यम से भी स्पष्ट है- विज्ञानमयस्तेनैष पूर्णः। स वा एव पुरुषधिर एव। तस्यपुरुषविधतामन्वयं पुरुषविधः। तस्य श्रद्धैव शिरः ऋतं दक्षिणः पक्षः। सत्यमुत्तरः पक्षः, योग आत्मा। महः पुच्छं प्रतिष्ठा। तदत्येय श्लोको भवति। (तै. ब्रह्मा 4-1) विज्ञानमय-मनोमयकोश एवं बुद्धि ही परमपुरुष की आश्रय स्थान है। इन सन्दर्भों में द्वैताद्वैत व अद्वैतवेदान्तदर्शन एकमत है। अद्वैतवेदान्तदर्शन में बुद्धि के अन्य लक्षणों में द्वैताद्वैतवेदान्तदर्शन की साम्यता अधिक स्पष्ट नहीं दिखायी देती है। द्वैतवेदान्तदर्शन, विशिष्टाद्वैत वेदान्तदर्शन शुद्धाद्वैतवेदान्तदर्शन, अचित्त्यभेदाभेद वेदान्तदर्शन द्वैताद्वैतवेदान्तदर्शन बुद्धि के निम्न लक्षणों से सहमत हैं-

1.बुद्धि की गणना विज्ञानमकोश में है, 2. बुद्धि ही परमपुरुष की आश्रय स्थान है, 3. बुद्धि गुह्य स्थान है, 4. बुद्धि ही स्मृति है।

अन्य दर्शनों में बुद्धि-

सर्वव्यवहारहेतुर्बुद्धिर्ज्ञानम्। सा च द्विविधा स्मृति रनुभश्च। तर्कसंग्रहः (वैशेषिकदर्शन)

वैशेषिक दर्शन में समस्त व्यवहारों का कारण बुद्धि को माना है।

बुद्धेश्चैवं निमित्त सद्भावोपलम्भात्।।36।।

तत्त्वप्रधानभेदाच्चमिथ्याबुद्धेद्वैविध्योपपत्तिः।।37।।

बुद्धिरूपलब्धिजन्यमित्यऽनर्थान्तरम्।।15।। (न्यायदर्शन)

न्यायदर्शन में बुद्धि कोमिथ्यारूप एवं उपलब्धि ज्ञान के रूप में स्वीकार किया है।

समानकर्मयोगे बुद्धेः प्राधान्यं लोकबल्लोकवत्।।47।। (सांख्य दर्शनम्)

सांख्यदर्शन में बुद्धि को ही प्रधान माना है।

व्यवहारमात्राहेतुर्ज्ञानं बुद्धिः प्रकीर्तिता।

सा चापि द्विविधा ज्ञेया ह्यनुभूति स्मृतिस्तथा।। (आयुर्वेद दर्शन)

आयुर्वेददर्शन के अनुसार सभी व्यवहारों का हेतु बुद्धि है। और वह दो प्रकार की है स्मृति व अनुभूति रूपा।

द्वैताद्वैत दर्शन में बुद्धि को ही स्मृति रूप से ग्रहण किया गया है। द्वैताद्वैत दर्शन की भांति निम्न दर्शनों में बुद्धि को स्मृति के पर्याय रूप में ग्रहण किया है-

1. न्याय दर्शन, 2. वैशेषिक दर्शन, 3. आयुर्वेद दर्शन

इन सभी दर्शनों में बुद्धि को स्मृति के पर्याय रूप में ग्रहण किया है। अतः बुद्धि के सन्दर्भ में ये सभी दर्शन द्वैताद्वैत वेदान्तदर्शन से अभिन्न हैं। परन्तु सांख्य दर्शन इन सभी दर्शनों की भांति द्वैताद्वैत दर्शन के बुद्धि के सन्दर्भ में एकमत नहीं। वह कहता है कि सर्वत्र बुद्धि की प्रधानता है।

शोधपत्रसार- शोधपत्र में शोधकर्ता से यह सार प्राप्त किया कि द्वैताद्वैत वेदान्तदर्शन में बुद्धि की गणना विज्ञानमयकोश में की गई है। बुद्धि ही स्मृति की पर्यायी है। इस प्रकार से स्मृति व बुद्धि में मात्रा आनुपूर्वी का भेद है। वास्तव में दोनों एक ही हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ-

1. आचार्य जगदगुरु श्रीभगवत् विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त डॉ. स्वामी राधवाचार्य वेदान्ती शास्त्री देवर्षि कमलनाथ अध्यक्ष, श्री जानकी नाथ बड़ा शास्त्रीविष्णु प्रसाद मंदिर ट्रस्ट रेवासा सीकर (राज) 2003

2. गोयन्दका श्रीहरिकृष्ण श्रीमद्भगवद्गीता गीताप्रेस गोरखपुर, 2017 रामानुजभाष्य हिन्दी अनुवाद

3. लता डॉ. सुमन विशिष्टाद्वैत की आचार परिमलपब्लिक शन्स, मीमांसा दिल्ली, 2000

4. शास्त्री प्रो. डॉ. प्रभाकर भगवन्निम्बार्काचार्य रचना प्रकाशन, जयपुर, 2017 सिद्धान्त उपासना

5. गुप्त डॉ. रामनिवास दर्शनाचार्य भारतीयदर्शन लक्ष्मीप्रकाशन, दिल्ली

6. त्रिपाठी श्री रामशरण शास्त्री वेदान्तसारः चैखम्भा विद्या भवन, वाराणसी-221001

7. शर्मा डॉ. उमाशंकर 'ऋषि'श्रीमल्माधवाचार्यकृतःचैखम्भा विद्या भवन, सर्वदर्शन संग्रहः वाराणसी 221001/2016

8. आचार्य श्रीभद्रवल्लभ श्रीमदब्रह्मसूत्राणु भाष्यम् अक्षय प्रकाशनेन देहलीस्थ प्रणीतम् 1927/298/2005

9. दास डॉ. स्वामी द्वारका वेदान्तसिद्धान्त रत्नांजलिः भारतीयविद्या संस्थान (काठियाबाबा) वाराणसी, 2017

10. भारती स्वामी परमानन्द वेदान्तप्रबोध वेदान्तदर्शन समिति करनाल (हरियाणा)